ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 93-96**

ISSN NO.- 2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.- 2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

शिक्षार्थियों के पठन–पाठन में डिजिटल शिक्षा के महत्व का विश्लेषण

1. डॉ0 योगेश मैनाली
2. डॉ0 राकेश पंत

1. सहायक प्राध्यापक– समाजशास्त्र, 2. सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, ए0डी0 पंत केन्द्रीय पुस्तकालय एस0एस0जे0 परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड), भारत

Received-25.04.2024, Revised-02.05.2024, Accepted-08.05.2024 E-mail: yogesh928@gmail.com

***सारांशः** मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य घटक होती है। शिक्षा व्यक्तियों को समाज के लोगों के साथ अन्तःक्रिया करने के तरीकों का बोध कराने का काम भी कराती है। यदि मनुष्यों में शिक्षा का स्तर अच्छा होगा तब वे अपने सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–शैक्षणिक, सामाजिक–राजनैतिक, सामाजिक–आर्थिक, सामाजिक–नैतिक एवं सामाजिक–धार्मिक जिम्मेदारियों एवं कर्तव्यों का निर्वहन करने के साथ–साथ अपने व्यक्तित्व का विकास बडी/बखूबी से करेंगें। इस बात से सभी वाकिफ हैं कि शिक्षा को प्राप्त करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों की बडी/भूमिका होती है। इन शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षार्थियों को शिक्षा मिलती है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए तीन आयामों का होना नितान्त आवश्यक होता है– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं वातावरण। ये तीन स्तम्भ अच्छी शिक्षा के लिए आवश्यक होते हैं। शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के आमने–सामने की अन्तःक्रिया शिक्षार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने में मदद करती है। कहने का मतलब है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थियों में आमने–सामने के संबंध होते है। शिक्षार्थियों कों शैक्षणिक संस्थानों में जाकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। जहाँ पर शिक्षक – शिक्षार्थियों को ब्लैकबोर्ड एवं चाक की मदद से पाठयक्रम को समझाते हैं, प्रैक्टिस करवाते हैं। कुल मिलाकर शिक्षा की प्राप्ति के लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को एक–दूसरे के साथ प्रत्यक्ष तौर पर आमने–सामने रहना पड़ता है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होते रहते हैं, जो विकास के लिए आवश्यक होते हैं। यदि परिवर्तन नहीं होगा तो समाज स्थिर हो जायेगा। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां परिवर्तन नहीं हुए हो। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों के पीछे कहीं न कहीं शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रकार हम कह सकते है कि शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक तौर पर समाज में बदलाव लाती है, जो व्यक्ति के साथ–साथ देश के विकास के लिए भी आवश्यक होता है। प्रश्न उठता है कि क्या आज शिक्षा के क्षेत्र या स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है? यदि हाँ तो इस परिवर्तन के पीछे कौन से जिम्मेदार कारक हैं? निश्चित तौर पर आज शिक्षा और शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, और संचार शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारक हैं।*

कुंजीभूत शब्द– सर्वांगीण विकास, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, नैतिक, निर्वहन, नितान्त, शिक्षा ग्रहण, शैक्षणिक संस्थानों।

आज की शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा के परिवर्तित रूप का जीता जागता उदाहरण है। इस व्यवस्था ने शिक्षा को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सहायता से परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के परम्परागत साधनों जैसे–ब्लैकबोर्ड एवं चॉक के स्थान पर अब कक्षाऐं स्मार्टबोर्ड, लेजर लाईट, डिजिटल मार्कर, टेबलेट, लैपटाप, कम्प्यूटर एवं स्मार्टफोन में तब्दील हो गई हैं। जिसे आज आनलाईन शिक्षा, ई–शिक्षा तथा डिजिटल शिक्षा के नामों से जाना जाता है। इस शिक्षा व्यवस्था ने शिक्षक–शिक्षार्थियों के आमने–सामने की अंतःक्रिया को डिजिटल कर दिया है। यानि शिक्षक और शिक्षार्थी देश के किसी भी कोने में बैठकर इन्टरनेट के माध्यम से आज पठन–पाठन का कार्य कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें दूर महानगरों में भी जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आवश्यक है शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के पास इंटरनेट की सुविधा।

मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यानि मनुष्य के सर्वांगीण विकास का रास्ता शिक्षा ही प्रशस्त करती है। जिससे मनुष्य की सामाजिक उन्नति होती है। यदि समाज के सभी व्यक्ति शिक्षित होंगे तो देश का सामाजिक–आर्थिक, सामाजिक–राजनैतिक, सामाजिक–धार्मिक एवं सामाजिक–शैक्षणिक विकास तीव्र गति से होगा। मतलब साफ है कि शिक्षा व्यक्ति एवं समाज की तरक्की के विविध आयामों को मजबूत करने का कार्य करती है। शिक्षा व्यक्तियों को प्रस्थिति यैजंजनेद्ध प्रदान करवाती है। जिससे व्यक्ति अपना और अपने देश का विकास करते हैं, क्योंकि प्रस्थितियां यैजंजनेद्ध ही राष्ट्र के विकास के लिए नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्चयन को सार्थक बनाती हैं। जिससे सम्पूर्ण समाज उन्नति की राह पर आगे बढ़ता है। इस बात को कोई नकार नहीं सकता है कि समाज के सभी वर्ग चाहे वे उच्च वर्ग हों या कमजोर वर्ग हो या समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति हों सभी का कल्याण शिक्षा से ही मुमकिन होता है। प्राचीन भारत में शिक्षार्थियों को शिक्षा अर्जन करने के लिए गुरूकुलों, आश्रमों, धर्मशालाओं, घटिकाओं एवं विद्यापीठों में रहकर विद्याअर्जन करना पड़ता था। धीरे–धीरे इन शिक्षण संस्थानों का स्थान स्कूल, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों ने ले लिया है। शिक्षा अर्जन के लिए शिक्षार्थियों को इन शैक्षणिक संस्थानों में जाना पड़ता है। ये शिक्षण संस्थान बड़ें–बड़ें महानगरों एवं नगरों में होते हैं। इनमें साधन सम्पन्न लोग ही अपने बच्चों को शिक्षा अर्जन के लिए भेज पाते हैं। क्योंकि भारत के अधिकांश लोग आज भी गांवों में रहते हैं। गांवों से इन नगरों एवं महानगरों की भौगोलिक दूरी के ज्यादा होने एवं ग्रामीणों के पास संसाधनों की कमी के कारण ज्यादातर ग्रामीण अपने बच्चों को इन शिक्षण–संस्थानों में भेजने में असमर्थ होते हैं। जिससे उनके बच्चों की पढ़ाई–लिखाई में ब्रेक लग जाता है। यानि पढ़ाई–लिखाई बीच में ही रूक जाती है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकसित होने एवं नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से आज शिक्षा के क्षेत्र, स्तर पहुंच एवं स्वरूपों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। जिसने शिक्षार्थियों की पढ़ाई–लिखाई में बांधा, ब्रेक और भौगोलिक दूरी जैसी समस्याओं को डिजिटल शिक्षा ने दूर कर दिया है। आज डिजिटल शिक्षा को

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

प्राप्त करने के लिए न तो गांवों से नगरों एवं महानगरों में जाने की जरूरत है और न ही बड़ें–बड़ें कोचिंग संस्थानों में जाकर पड़ने की आज शिक्षार्थी अपने गांवों में रहकर भी ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से पढ़ सकते हैं और कोचिंग ले सकते हैं। गांव के या विश्व के किसी भी कोने में बैठकर शिक्षक, शिक्षार्थी को शिक्षा दे सकते हैं। यह सब मुमकिन हुआ है ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा जो वर्तमान समय में बहुत कारगर सिद्ध हो रही है। आज शिक्षा के पठन पाठन का समूचा परिदृश्य ही बदल चुका है। इस शिक्षण प्रणाली में शिक्षार्थी शिक्षक से पारम्परिक कक्षा में नहीं मिलते हैं। इसमें शिक्षक– शिक्षार्थी इंटरनेट के द्वारा लैपटाप, कम्पयूटर, टैबलेट और स्मार्टफोन के द्वारा अंतःक्रिया करते हैं, और शिक्षण– अधिगम को सफल बनाते हैं। इस शिक्षण व्यवस्था ने दुनिया भर के शिक्षकों शिक्षार्थियों को इंटरनेट के माध्यम से जोड़ने का कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप विद्वान शिक्षकों एवं जिज्ञासु शिक्षार्थियों के बीच की दूरी समाप्त हो गई है। इस शिक्षण व्यवस्था से उन माता– पिताओं को भी बहुत फायदा हुआ है, जो कोचिंग या शिक्षा अर्जन के लिए अपने बच्चों को अपने गांवों से बाहर शहरों में संसाधनों की कमी की वजह से भेजने में असमर्थ होते थे। अब शिक्षार्थी अपने गांवों में रहकर मैडिकल, इंजीनियरिंगस, सिविल सर्विसेज आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी अपनी सहूलियत के अनुसार कर सकते हैं। कोरोना काल में जब संपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था। उस समय डिजिटल शिक्षा ही एक विकल्प के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। कोरोना संकटकाल में शिक्षक एवं शिक्षार्थी वर्चुअल रूप में अपनी शिक्षा को अनवरत रूप में जारी रख सके थे।

शोध आलेख का उद्देश्य– इस शोध आलेख में शिक्षार्थियों के पठन–पाठन में डिजिटल शिक्षा के महत्व का विश्लेषण करने का एक छोटा सा प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल शिक्षा क्या है? डिजिटल शिक्षा प्रणाली या आनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव अभ्यास और विज्ञान के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है।[1] वर्ष 1993 से डिजिटल यॉनि आनलाइन शिक्षा को वैध शिक्षा माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है, जिन्हें प्रयुक्त भाषा में दूरस्थ शिक्षा कहा जाता है। इसमें निर्धारित पाठयक्रम को इंटरनेट के माध्यम से संचालित किया जाता है। ऑनलाइन शिक्षा में व्यवस्था में शिक्षार्थी अपने घर में रहकर किसी भी इलेक्ट्रानिक उपकरण जैसे – स्मार्टफोन, टैबलट और लैपटाप के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही एक शिक्षक अपने घर में बैठकर दुनिया के किसी भी कोने में बैठे अपने छात्रों को शिक्षा प्रदान कर सकता है। भारत में डिजिटल यॉनि ऑनलाईन शिक्षा के महत्व का ही परिणाम है कि बड़ी–बड़ी सेवाओं जैसे सिविल सर्विसेज, इंजीनियरिंग, मैडिकल और कानून आदि की शिक्षा भी आज कई संस्थानों द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध करायी जाती है।[2] इसमें कोई दो राय नहीं है कि प्रौद्योगिकी कई तरीकों से शिक्षा को बदल रही है, लेकिन इसका महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह शिक्षा को सभी के लिए सुगमता और आसानी से उपलब्ध कराती है। डिजिटल शिक्षा व्यवस्था शिक्षार्थियों को इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी अपने असाइनमेंट और शिक्षण सामाग्री प्राप्त करने की सुविधा देती है। यह उन शिक्षार्थियों के लिए तो वरदान है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है या उन्हें नियमित स्कूल जाने में परेशानी होती है।[3]

डिजिटल शिक्षा के उद्देश्य– डिजिटल शिक्षा जिसे माडर्न टीचिंग भी कहते हैं, जो आज के समाज की मुख्य आवश्यकता बन गयी है। यह शिक्षार्थियों को अपने अध्ययन से संबंधित संदेहों को दूर करने में बड़ी मदद करती है। इस शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्यों को निम्नाकिंत बिंदुओं के माध्यम से समझना समीचीन होगा :

1–डिजिटल शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों तक पहुंच बनाना है।
2–इसका उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है।
3– यह व्यवस्था शिक्षार्थियों के सीखने के तरीकों को सरल और सुविधाजनक बनाती है।
4–इसका उद्देश्य भौगोलिक बाधाओं को दूर कर शिक्षा को समाज के अंतिम पायदान के शिक्षार्थियों तक पहुंचाना है।
5–इस व्यवस्था का उद्देश्य शिक्षण संस्थाओं का डिजिटल रूप से सुदृढीध्करण करना है।
6– इसका मुख्य उददेश्य समय की बाध्यता को दूर करना है।

डिजिटल शिक्षा के प्रकार – ई– शिक्षा यॉनि डिजिटल शिक्षा व्यवस्था को दो भागों में बांटा गया है :

1–सिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था– सिंक्रोनस शब्द का अर्थ है "एक ही समय में एक साथ कार्य करना।" इसमें शिक्षार्थी एवं शिक्षक अलग–अलग स्थानों से एक–दूसरे से ऑनलाइन माध्यम से संवाद करते हैं। इस तरह किसी विषय को सीखने पर शिक्षार्थी अपने प्रश्नों का तत्काल उत्तर जान पाते हैं। जिससे शिक्षार्थियों के उस विषय या यूनिट से संबधित संदेह भी उस ही समय दूर हो जाते हैं। इसी कारण ऑनलाइन शिक्षा की इस व्यवस्था को रियल टाइम लर्निंग भी कहा जाता है। विडियों कॉन्फ्रेंसिंग, लाइव चौट एवं वर्चुर्वल क्लासरूम इसके उदाहरण हैं।[4]

असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था– इस डिजिटल शैक्षिक व्यवस्था से तात्पर्य है कि "एक समय में नहीं" अर्थात यहां विद्यार्थी और शिक्षकों के बीच वास्तविक समय में शैक्षिक संवाद करने का कोई विकल्प नहीं है। इस व्यवस्था में पाठ्यक्रम से संबंधित जानकारी पहले से ही उपलब्ध होती है। इस तरह की डिजिटल शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें विद्यार्थी किसी भी समय जब चाहे तब शैक्षणिक पाठ्यक्रमों तक पहुंच सकते हैं। प्री रिकार्डेड विडियो, बेवसाइट, ई–बुक्स इसके उदाहरण हैं।[5]

डिजिटल शिक्षा प्रणाली के लाभ– डिजिटल शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी अपने समय एवं सहूलियत के हिसाब से पड़ते हैं। यह शिक्षा व्यवस्था आज बहुत पसंद की जाती है। इसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ज्यादा सक्रिय (Active) रहते हैं। डिजिटल शिक्षा से

शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को होने वाले लाभों पर यहां चर्चा करने की कोशिश की गयी है।

समय एवं लागत प्रभावी विकल्प– डिजिटल शिक्षा के लिए जिन संसाधनों की जरूरत होती है, वे सस्ते होते हैं। डिजिटल प्लेटफार्म छात्रों और शैक्षणिक सस्थानों दोनों को पैसे बचाने में सहायता करते हैं। ऐसे में ऑनलाईन शिक्षण एक समय और लागत प्रभावी विकल्प माना जाता है। इस शिक्षण व्यवस्था में भौतिक बुनियादी ढांचा और मुद्रित सामग्री की आवश्यकता कम होती है।

इंटरैक्टिव कक्षा संवाद– डिजिटल शिक्षा के द्वारा शिक्षार्थी और शिक्षकों में शिक्षण के दौरान मजबूत संवाद बन जाता है। शिक्षार्थी दृश्य– श्रृव्य ध्वनियों एवं आडियो–वीडियो के माध्यम से पढ़ाई को आसानी से समझ लेते हैं।

पाठ्यक्रम को पूरा करने में आसानी– ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा कम समय में पाठ्यक्रम पूरा किया जा सकता है। इसमें स्कूल, कॉलेज की छुट्टियां एवं खराब मौसम आदि समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है।

विजुअलाइजेशन के माध्यम से अधिगम में आसानी– ऑनलाइन शिक्षण में आडियो–विडियों के माध्यम से पठन–पाठन होता है। विजुअलाइजेशन से शिक्षार्थी जल्दी सीखते हैं। विजुअलाइजेशन शिक्षार्थियों के मस्तिष्क में ज्यादा समय तक रहता है। कुल मिलाकर ऑनलाइन शिक्षण में विजुअलाइजेशन शिक्षार्थियों को सीखने तथा पाठ्यक्रम को समझने में मदद् करता है।

शिक्षक एवं शिक्षार्थी क्रियाशील रहते है– डिजिटल शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थियों की अंतःक्रिया का स्तर अधिक क्रियाशील (Active) रहता है। यदि विद्यार्थियों को किसी विषय को समझने में कोई दिक्कत हो रही, तब विद्यार्थी उसी समय अपनी शंकाओं का समाधान शिक्षक से ढूंढ लेते हैं। इस प्रकार ऑनलाईन शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों क्रियाशील रहते हैं।

डिजिटल शिक्षण व्यवस्था में तीव्रता होती है– डिजिटल शिक्षण व्यवस्था में तीव्रता का गुण होता है। देश के किसी भी कोने में बैठा शिक्षक एवं शिक्षार्थी डिजिटल शिक्षा को त्वरित गति से भेज सकते हैं, प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह त्वरित सूचना का प्रेषण और फीडबैक ऑनलाइन शिक्षा के महत्वों में से एक हैं।

डिजिटल शिक्षण में स्थायित्व होता है– डिजिटल शिक्षण में स्थायित्व होने के कारण यह शिक्षार्थियों की पसंद बना है। इसमें शिक्षकों द्वारा बनाए गए आडियो वीडियो कॉफी लंबे समय तक डिजिटल प्लेटफॉर्म में रहते हैं, जिससे शिक्षार्थियों को जब कभी कोई समस्या होती है तब वे इन्हें देखकर अपने संदेहों को दूर कर लेते हैं।

डिजिटल शिक्षा ग्रहण करने में आयु की बाध्यता नहीं– सीखने के लिए कोई आयु की बाध्यता नहीं होती है। यह डिजिटल शिक्षा की विशेषताओं में से एक महत्वपूर्ण विशेषता है। बूढ़ें, जवान, बच्चें एवं महिलाएं यदि किसी विषय के बारे में अपना ज्ञानार्जन करना चाहते हैं तो वे ऑनलाइन कर सकते है।

डिजिटल शिक्षण में सीखने के अधिक साधन– डिजिटल शिक्षण व्यवस्था मे सीखने के लिए अधिक साधन मौजूद हैं। इसमें पीडीएफ, कक्षाओं की ऑनलाइल रिकॉर्डिंग, पॉडकास्ट, व्हाट्सअप और वेबसाइट एवं यूट्यूब जैसे अनेकों डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। इनका उपयोग शिक्षण अधिगम में शिक्षार्थियों के लिए आज बहुत मददगार साबित हो रहा है।

डिजिटल शिक्षा आज की जरूरत– आज प्रौद्योगिकी रोजमर्रा की जिन्दगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी है। डिजिटल शिक्षा का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि छात्र प्रौद्योगिकी को अपनी रोजमर्रा की दिनचर्या का हिस्सा बना रहे हैं। ऑनलाइन कक्षाओं, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्मों और अनुसंधानों के ऑनलाइन किये जाने से छात्र प्रौद्योगिकी का बेहतर ढंग से उपयोग कर रहे हैं।[6]

नई शिक्षा नीति में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व– नई शिक्षा नीति 2020 प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर जोर देती है। शिक्षक अपनी शिक्षण कुशलता बढ़ाने, विविध शिक्षण शैली और इंटरैक्टिव शिक्षण का अनुभव प्राप्त करने के लिए डिजिटल मॉडलों, ऑनलाइन संसाधनों और शैक्षणिक प्लेटफार्मों से लाभ उठा सकते हैं। नई शिक्षा नीति ने शिक्षा में तकनीकी सुधार को महत्वपूर्ण माना है, जिससे शिक्षार्थियों को आधुनिक तकनीकों का ज्ञान प्राप्त करने में आसानी हो सके।[7]

निष्कर्ष– निःसंदेह यदि डिजिटल शिक्षा को आज के युग की एक जरूरत माना जाये, तो इसमें कोई दो राय नहीं हैं। डिजिटल शिक्षा, शिक्षण व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव को इंगित करती है। यह शिक्षण व्यवस्था को प्रभावी बनाने के साथ–साथ शिक्षण अधिगम को आसान बनाने का कार्य करती है। इस शिक्षण व्यवस्था का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह शिक्षण में प्रौद्योगिकी के सकारात्मक उपयोग को बढाघ्वा देती है जिससे शिक्षार्थियों को शिक्षण अधिगम में आसानी होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हर सिक्के के दो पहलू होते है– सकारात्मक और नकारात्मक उसी प्रकार डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू मौजूद हैं। इंटरनेट की कम स्पीड, ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के साधनों की अपर्याप्तता, शिक्षकों की ऑनलाइन अधिगम शिक्षण पद्धतियों में निपुणता एवं कुशलता में कमी, ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षार्थियों द्वारा अनचाही साइटों पर ध्यान आकृष्ट करना, क्रियाशील (Active) नहीं रहना आदि अनेक ऐसे कारण हैं, जो डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक पक्षों को नकारात्मक पक्षों की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। अपवाद चाहे जो भी हों, लेकिन आज के डिजिटलाइजेशन, मार्डनाइजेशन और ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में डिजिटल शिक्षा ने देश– विदेश की दूरियां कम कर दी हैं। इससे शिक्षार्थियों का बौद्धिक विकास एवं तार्किक क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही हैं। ये सब तथ्य कहीं न कहीं शिक्षार्थियों के पठन–पाठन में डिजिटल शिक्षा के महत्व को विश्लेषित करने का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. http://leveragedu.com "एक सुनहरे कल की शुरूआत ऑनलाइन शिक्षा" जनवरी 08,2024.

2. www.myexamsolution.com, ''भारत में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व'' सितम्बर 11, 2024.
3. www.idream education.k~ Org, "Understanding Digital education learning in the 21 st century"k~ A
4. www.drishtiias.com, ''इलेक्ट्रॉनिक शिक्षाः विशेषताऐं और चुनौतियां''।
5. www.drishtiias.com, ''इलेक्ट्रॉनिक शिक्षाः विशेषताऐं और चुनौतियां''।
6. www.k~ onlinemanipal.com,, "online learning pros and cons of online education"k~ may 06,2023 A
7. www.linkedin.k~ com, ''नई शिक्षा नीति के फायदे और नुकसान'' जनवरी 29, 2024.

*****